

यज्ञस्य प्राविता भव । (ऋ-3.21.3) तू यज्ञ का रक्षक बन।



यज्ञ से पुण्य

यज्ञ पुण्यों की कृषि है आध्यात्मिक एवं भौतिक दोनों ही जीवन अर्थात् जाति, आयु, और भोग तीनों ही हमारे द्वारा कृत कर्मों के पुण्य-अपुण्य कर्मशियों के आधार पर प्राप्त होता है व पुण्य को प्राप्त करने का सबसे बड़ा उपाय है, तो वह है **यज्ञ**

वेदों में बताया यही विधान । यज्ञ से होगा रोग निदान ॥